हजारी प्रसाद द्विवेदी

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» हजारी प्रसाद द्विवेदी: जीवन परिचय और प्रमुख रचनाएँ

प्रश्न 1 (आसान). हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का निधन किस वर्ष हुआ था?
उत्तर – सन् 1979 में।

प्रश्न 2 (आसान). उन्हें कौन सा राष्ट्रीय सम्मान मिला था?
उत्तर – पद्मभूषण।

प्रश्न 3 (मध्यम). हजारी प्रसाद द्विवेदी के किन्हीं दो निबंध संग्रहों के नाम बताइए।
उत्तर – अशोक के फूल, कल्पलता।

प्रश्न 4 (कठिन). आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के आलोचना साहित्येतिहास से संबंधित दो प्रमुख कृतियों के नाम लिखिए।
उत्तर – हिंदी साहित्य का आदिकाल, हिंदी साहित्य की भूमिका।

» पुरस्कार और सम्मान

प्रश्न 5 (आसान). द्विवेदी जी को भारत सरकार द्वारा कौन सा बड़ा सम्मान मिला था?
उत्तर – उन्हें भारत सरकार द्वारा 'पद्मभूषण' सम्मान मिला था।

प्रश्न 6 (आसान). किस विश्वविद्यालय ने द्विवेदी जी को 'डी. लिट्' की उपाधि से सम्मानित किया था?
उत्तर – लखनऊ विश्वविद्यालय ने उन्हें 'डी. लिट्' की उपाधि से सम्मानित किया था।

प्रश्न 7 (मध्यम). आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को मिले किन्हीं दो प्रमुख सम्मानों के नाम बताइए।
उत्तर – उन्हें 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार' और 'पद्मभूषण' सम्मान मिले थे।

प्रश्न 8 (कठिन). द्विवेदी जी को 'आलोक पर्व' के लिए कौन सा राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था और इसका क्या महत्व है?
उत्तर – 'आलोक पर्व' के लिए उन्हें 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार' मिला था। यह पुरस्कार भारतीय साहित्य के सर्वोच्च सम्मानों में से एक है, जो उनकी रचना की गुणवत्ता और साहित्यिक महत्व को दर्शाता है।

» द्विवेदी जी का साहित्यिक दृष्टिकोण और दर्शन

प्रश्न 9 (आसान). द्विवेदी जी के अनुसार, साहित्य मनुष्य को किससे बचाता है?
उत्तर – दुर्गति, हीनता और परमुखापेक्षिता से।

प्रश्न 10 (आसान). साहित्य का क्या काम है आत्मा के लिए?
उत्तर – आत्मा को तेजोद्दीप्त बनाना।

प्रश्न 11 (मध्यम). द्विवेदी जी के साहित्यिक दर्शन को अपने शब्दों में समझाइए।
उत्तर – द्विवेदी जी के अनुसार, साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि मनुष्य को नैतिक रूप से उन्नत करना है। यह उसे बुराइयों से बचाता है, आत्मविश्वास देता है और दूसरों के प्रति संवेदनशील बनाता है।

प्रश्न 12 (कठिन). यदि कोई रचना मनुष्य की आत्मा को तेजोद्दीप्त न कर सके, तो द्विवेदी जी उसे साहित्य क्यों नहीं मानते थे? विस्तार से चर्चा करें।
उत्तर – द्विवेदी जी के लिए साहित्य का सार मानव कल्याण और उसकी आंतरिक उन्नति में निहित था। वे मानते थे कि यदि कोई रचना पाठक को आत्म-गौरव, नैतिक बल और संवेदनशीलता नहीं दे पाती, तो वह अपने मूल उद्देश्य से भटक जाती है। ऐसी रचना केवल शब्दों का जाल होती है, जो मनुष्य के जीवन को सकारात्मक दिशा नहीं दे पाती। इसलिए, उनके लिए ऐसी रचना को 'साहित्य' कहना उचित नहीं था, क्योंकि वह मानव-जीवन के उत्थान के अपने प्राथमिक कर्तव्य को पूरा

नहीं करती थी।

» उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति का स्वरूप

प्रश्न 13 (आसान). द्विवेदी जी की रचनाओं में किस बात पर सबसे ज़्यादा ज़ोर दिया गया है, संस्कृति या इतिहास?
उत्तर – उनकी रचनाओं में संस्कृति और इतिहास दोनों का गहरा संगम मिलता है, लेकिन उनका ज़ोर भारतीय संस्कृति के व्यापक स्वरूप पर है।

प्रश्न 14 (आसान). क्या द्विवेदी जी ने केवल प्राचीन भारतीय संस्कृति की बात की है?
उत्तर – नहीं, उन्होंने प्राचीन के साथ-साथ मध्यकालीन और आधुनिक भारतीय संस्कृति के पहलुओं पर भी विचार किया है।

प्रश्न 15 (मध्यम). द्विवेदी जी ने किस प्रकार स्त्री-पीड़ा को भारतीय संस्कृति के संदर्भ में देखा है?
उत्तर – उन्होंने स्त्री को सामाजिक अन्याय का सबसे बड़ा शिकार माना और अपनी रचनाओं में, विशेषकर 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में, उसकी पीड़ा का गहरा विश्लेषण करते हुए उसकी महिमा को भी स्थापित किया।

प्रश्न 16 (कठिन). द्विवेदी जी को 'मानवतावादी साहित्यकार' क्यों कहा जाता है? उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति का कौन सा पहलू इसे प्रमाणित करता है?
उत्तर – उन्हें मानवतावादी साहित्यकार इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे मानव की जिजीविषा (जीने की इच्छा) और विजय यात्रा में अखंड आस्था रखते थे। भारतीय संस्कृति का विराट मानवतावाद वाला पहलू, जो किसी एक जाति की देन न होकर अनेक जातियों के श्रेष्ठ साधनांशों के संयोग से बना है, उनके इस मानवतावादी दृष्टिकोण को प्रमाणित करता है। वे लोक से विमुख किसी भी विज्ञान या सिद्धांत को स्वीकार नहीं करते थे।

» स्त्री-दलन और सामाजिक न्याय पर विचार

प्रश्न 17 (आसान). द्विवेदी जी 'स्त्री-दलन' को क्या मानते थे?
उत्तर – वे इसे एक 'सांस्कृतिक संकट' मानते थे।

प्रश्न 18 (आसान). द्विवेदी जी के किस उपन्यास में स्त्री के महत्व को दिखाया गया है?
उत्तर – 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में।

प्रश्न 19 (मध्यम). द्विवेदी जी के अनुसार, मानवता और लोक से विमुख कोई भी सिद्धांत उन्हें ग्राह्य क्यों नहीं था?
उत्तर – क्योंकि वे मानव की जिजीविषा (जीने की इच्छा) और विजययात्रा में अटूट विश्वास रखते थे, और मानवता को सर्वोपरि मानते थे।

प्रश्न 20 (कठिन). आज के संदर्भ में, आप द्विवेदी जी के स्त्री-दलन और सामाजिक न्याय पर विचारों को कितना प्रासंगिक मानते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।
उत्तर – आज भी स्त्री-दलन कई रूपों में मौजूद है (जैसे असमान वेतन, लैंगिक भेदभाव, अशिक्षा)। द्विवेदी जी के विचार आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि वे स्त्रियों के सशक्तिकरण और उन्हें समाज में बराबरी का स्थान दिलाने पर जोर देते हैं, जो एक न्यायपूर्ण समाज के लिए आवश्यक है।

» आलोचक और निबंधकार के रूप में द्विवेदी जी

प्रश्न 21 (आसान). द्विवेदी जी के आलोचक व्यक्तित्व की एक प्रमुख विशेषता क्या थी?
उत्तर – उन्होंने हिंदी चिंताधारा की सहज लोक-परंपरा को पहचाना।

प्रश्न 22 (आसान). द्विवेदी जी ने भक्ति काल के बारे में क्या राय दी?
उत्तर – उन्होंने इसे भारतीय चिंताधारा का सहज विकास माना।

प्रश्न 23 (मध्यम). निबंधकार के रूप में द्विवेदी जी के निबंधों की क्या खास बात थी?
उत्तर – उनके निबंधों में मौलिक विचार थे, जो पांडित्य के बोझ से मुक्त होकर सर्जनात्मक और आत्मपरक शैली में व्यक्त होते थे।

प्रश्न 24 (कठिन). आप द्विवेदी जी की आलोचना दृष्टि को 'प्रगतिशील मूल्य' के रूप में कैसे देखते हैं?
उत्तर – उनकी आलोचना दृष्टि ने भक्ति काल और उससे पहले के लोक-साहित्य को एक नया महत्व दिया, उसे भारतीय संस्कृति के विकास से जोड़ा, जिससे साहित्य को देखने का एक आधुनिक और प्रगतिशील नजरिया मिला।

» 'शिरीष के फूल' निबंध का परिचय

प्रश्न 25 (आसान). 'शिरीष के फूल' किस संग्रह से लिया गया है?
उत्तर – 'कल्पलता'।

प्रश्न 26 (आसान). निबंध में शिरीष वृक्ष किसका प्रतीक है?
उत्तर – मनुष्य की अजेय जिजीविषा का।

प्रश्न 27 (मध्यम). 'अजेय जिजीविषा' का अर्थ अपने शब्दों में समझाओ।
उत्तर – अजेय जिजीविषा का अर्थ है जीने की ऐसी इच्छा जिसे कोई भी मुश्किल हरा न सके, कभी हार न मानने वाला जीवन-भाव।

प्रश्न 28 (कठिन). लेखक ने शिरीष के फूल के माध्यम से गांधीजी को क्यों याद किया होगा?
उत्तर – लेखक ने शिरीष के फूल की अडिगता और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी डटे रहने की क्षमता के माध्यम से गांधीजी को याद किया होगा, क्योंकि गांधीजी ने भी शारीरिक बल की जगह आत्मबल और धैर्य से बड़े-बड़े संघर्षों का सामना किया था।

» शिरीष: कालजयी अवधूत का प्रतीक

प्रश्न 29 (आसान). लेखक ने शिरीष को किसकी उपमा दी है?
उत्तर – कालजयी अवधूत की।

प्रश्न 30 (आसान). शिरीष किस मौसम में भी फूल देता रहता है?
उत्तर – भीषण गर्मी में।

प्रश्न 31 (मध्यम). 'कालजयी अवधूत' से लेखक का क्या आशय है?
उत्तर – समय के प्रभावों को जीतकर हमेशा अडिग रहने वाला, मोहमाया से रहित योगी।

प्रश्न 32 (कठिन). शिरीष के वृक्ष को 'कालजयी अवधूत का प्रतीक' कहने के पीछे लेखक का गहरा संदेश क्या है?
उत्तर – लेखक यह संदेश देना चाहते हैं कि मनुष्य को भी शिरीष की तरह ही जीवन की हर विषम परिस्थिति में धैर्य, दृढ़ संकल्प और जीने की अटूट इच्छा शक्ति के साथ अविचल रहना चाहिए, हार नहीं माननी चाहिए। यह उसकी जिजीविषा का सबसे बड़ा प्रमाण है।

» शिरीष की कोमलता और मजबूती: एक विरोधाभास

प्रश्न 33 (आसान). कालिदास ने शिरीष के फूल के बारे में क्या कहा है?
उत्तर – उन्होंने कहा है कि शिरीष का फूल सिर्फ भँवरे के पैरों का कोमल दबाव ही सह सकता है।

प्रश्न 34 (आसान). शिरीष के फूल और फल में क्या समानता है?
उत्तर – नहीं, उनमें कोई समानता नहीं है, उनमें विरोधाभास है।

प्रश्न 35 (मध्यम). शिरीष में 'कोमलता और मजबूती' का विरोधाभास कैसे दिखाई देता है?
उत्तर – उसके फूल अत्यंत कोमल होते हैं, जबकि उसके फल बहुत मजबूत और पेड़ पर लंबे समय तक टिके रहते हैं।

प्रश्न 36 (कठिन). लेखक ने शिरीष के फूल की कोमलता के बारे में कालिदास के कथन को क्यों स्वीकार किया है, बावजूद इसके कि उन्हें लगता है कि कुछ कवि इसे गलत समझते हैं?
उत्तर – लेखक खुद भी शिरीष के फूल से पक्षपात रखते हैं, यानी उन्हें भी यह फूल बहुत पसंद है, और वे इतने बड़े कवि की बात का विरोध नहीं करना चाहते।

» पुरानी पीढ़ी बनाम नई पीढ़ी का द्वंद्व

प्रश्न 37 (आसान). लेखक के अनुसार, शिरीष के पुराने फल क्या नहीं छोड़ते?
उत्तर – स्थान

प्रश्न 38 (आसान). पुरानी पीढ़ी के लोगों को हटाने के लिए नई पीढ़ी को क्या करना पड़ता है?
उत्तर – धक्का मारना पड़ता है

प्रश्न 39 (मध्यम). पुरानी पीढ़ी बनाम नई पीढ़ी का द्वंद्व से लेखक क्या समझाना चाहते हैं?
उत्तर – लेखक यह समझाना चाहते हैं कि कैसे समाज में पुरानी सोच और पुराने लोग अपनी जगह छोड़ने को तैयार नहीं होते, और नई पीढ़ी को बदलाव लाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

प्रश्न 40 (कठिन). यह द्वंद्व साहित्य और राजनीति में कैसे दिखाई देता है, अपने शब्दों में समझाइए।
उत्तर – साहित्य में, नए लेखक और उनकी नई शैलियों को स्थापित होने में कठिनाई होती है क्योंकि पुराने आलोचक और पाठक पुरानी लेखन शैली से चिपके रहते हैं। राजनीति में, अनुभवी नेता अक्सर अपनी सत्ता या पद छोड़ने को तैयार नहीं होते, भले ही युवा नेता बेहतर और आधुनिक विचार लेकर आ रहे हों, जिससे दोनों के बीच टकराव होता है।

» परिवर्तनशीलता और जीवन की अनिवार्यता

प्रश्न 41 (आसान). लेखक के अनुसार जीवन में क्या ज़रूरी है - स्थिर रहना या गतिशील रहना?
उत्तर – गतिशील रहना।

प्रश्न 42 (आसान). 'जमे कि मरे!' – इस वाक्य का अर्थ क्या है?
उत्तर – जो एक जगह स्थिर हो गया, वह खत्म हो जाएगा।

प्रश्न 43 (मध्यम). द्विवेदी जी जड़ता को किसका प्रतीक मानते हैं? उदाहरण देकर समझाओ।
उत्तर – जड़ता को मृत्यु का प्रतीक मानते हैं। जैसे, अगर तुम एक ही जगह रुक जाओ, कुछ नया न सीखो, तो ज़िंदगी में पीछे रह जाओगे और खत्म हो जाओगे। ठीक वैसे ही जैसे रुका हुआ पानी सड़ जाता है।

प्रश्न 44 (कठिन). शिरीष का उदाहरण देकर लेखक हमें जीवन में परिवर्तनशीलता की क्या सीख देना चाहते हैं?
उत्तर – शिरीष हर मौसम में, चाहे कितनी भी गर्मी हो, टिका रहता है। वह वायुमंडल से अपना रस खींचता रहता है, यानी वह परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढालता है, 'जड़' नहीं होता। लेखक कहते हैं कि हमें भी जीवन की मुश्किलों में हार नहीं माननी चाहिए, बल्कि शिरीष की तरह बदलते रहना चाहिए, नई परिस्थितियों से तालमेल बिठाना चाहिए, तभी हम जीवित रह पाते हैं और आगे बढ़ पाते हैं। जड़ता मौत है, गतिशीलता ही जीवन है।

» कवि की अनासक्ति और मस्ती

प्रश्न 45 (आसान). कबीर दास को लेखक ने शिरीष के समान क्यों कहा है?
उत्तर – कबीर दास को लेखक ने शिरीष के समान 'मस्त और बेपरवा' स्वभाव का होने के कारण कहा है।

प्रश्न 46 (आसान). अनासक्ति का साधारण अर्थ क्या है?
उत्तर – अनासक्ति का अर्थ है किसी चीज़ से मोह या लगाव न रखना, तटस्थ रहना।

प्रश्न 47 (मध्यम). लेखक के अनुसार, कौन सा कवि सच्चा कवि नहीं बन सकता?
उत्तर – लेखक के अनुसार, जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो 'फक्कड़' नहीं बन सका और जो किए-कराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह सच्चा कवि नहीं बन सकता।

प्रश्न 48 (कठिन). कालिदास की 'स्थिर-प्रज्ञता' और 'विदग्ध प्रेमी का हृदय' उन्हें कैसे एक महान कवि बनाते हैं?
उत्तर – कालिदास की 'स्थिर-प्रज्ञता' (ज्ञान में स्थिरता) और 'विदग्ध प्रेमी का हृदय' (प्रेम को गहराई से समझने वाला हृदय) उन्हें अनासक्त योगी बनाते हैं। वे भावनाओं को समझते हुए भी उनमें फँसते नहीं, बल्कि उनसे ऊपर उठकर सुंदर और शाश्वत काव्य रचते हैं, जो किसी भी बाहरी लाभ की चिंता से मुक्त होता है।

» कालिदास का सौंदर्य-दर्शन और अनासक्ति

प्रश्न 49 (आसान). कालिदास का सौंदर्य-दर्शन केवल बाहरी सुंदरता तक सीमित था या आंतरिक तक?
उत्तर – आंतरिक सुंदरता तक।

प्रश्न 50 (आसान). अनासक्ति का सामान्य अर्थ क्या है?
उत्तर – सांसारिक मोह-माया से दूर रहना।

प्रश्न 51 (मध्यम). लेखक ने कालिदास की अनासक्ति की तुलना गन्ने का रस निकालने वाले किसान से क्यों की है?
उत्तर – क्योंकि जैसे किसान गन्ने का पूरा रस निचोड़ लेता है, वैसे ही कालिदास भी किसी भी वस्तु के बाहरी आवरण को भेदकर उसके भीतर के भाव-रस को ग्रहण करते थे, बिना किसी मोह के।

प्रश्न 52 (कठिन). कालिदास की अनासक्ति और उनका सौंदर्य-दर्शन एक-दूसरे से किस प्रकार संबंधित हैं, और यह उन्हें महानता की ओर कैसे ले जाता है?
उत्तर – कालिदास की अनासक्ति उन्हें किसी भी वस्तु के बाहरी सुख-दुख या दिखावे में न फँसने देती थी। इसी अनासक्ति के कारण उनका सौंदर्य-दर्शन गहरा था, वे केवल ऊपरी सुंदरता नहीं, बल्कि उसके भीतर के सार, उसकी आत्मा को देख पाते थे। यह गहरी दृष्टि और तटस्थता ही उन्हें साधारण कवियों से अलग करके महान बनाती है, क्योंकि वे सच्चा और वास्तविक भाव-रस अपनी कला में भर पाते थे।

» शिरीष और गांधी: जिजीविषा और आत्मबल का प्रतीक

प्रश्न 53 (आसान). शिरीष के फूल की तुलना लेखक ने किस महापुरुष से की है?
उत्तर – महात्मा गांधी से.

प्रश्न 54 (आसान). जिजीविषा शब्द का अर्थ क्या है?
उत्तर – जीने की प्रबल इच्छा.

प्रश्न 55 (मध्यम). शिरीष और गांधी में पाए जाने वाले किन्हीं दो समान गुणों को संक्षेप में बताइए.
उत्तर – जिजीविषा (जीने की इच्छा) और आत्मबल (आंतरिक शक्ति). दोनों विषम परिस्थितियों में भी दृढ़ रहते हैं.

प्रश्न 56 (कठिन). लेखक 'हाय, वह अवधूत आज कहाँ है!' कहकर क्या संदेश देना चाहते हैं?
उत्तर – लेखक इस कथन से यह संदेश देना चाहते हैं कि गांधी जी और शिरीष जैसे आत्मबली और जिजीविषु व्यक्तित्व आज की दुनिया में बहुत कम मिलते हैं. वह ऐसे दृढ़ और अनासक्त लोगों की कमी महसूस करते हैं, जो सिर्फ़ भौतिक सुखों के पीछे न भागकर आंतरिक शक्ति पर विश्वास करें.

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म किस वर्ष और किस स्थान पर हुआ था? उनकी किन्हीं दो प्रमुख रचनाओं के नाम बताइए।

› सबसे पहले, हम द्विवेदी जी के जन्म वर्ष और स्थान को पहचानेंगे।
› फिर, उनकी साहित्यिक कृतियों की सूची में से दो अलग-अलग प्रकार की प्रमुख रचनाओं को चुनेंगे।
› जन्म का वर्ष सन् 1907 था, और स्थान आरत दुबे का छपरा, बलिया (उत्तर प्रदेश) था।
› उनकी प्रमुख रचनाओं में 'अशोक के फूल' (जो एक निबंध है) और 'बाणभट्ट की आत्मकथा' (जो एक उपन्यास है) शामिल हैं।

उत्तर – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1907 में आरत दुबे का छपरा, बलिया, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनकी दो प्रमुख रचनाएँ 'अशोक के फूल' और 'बाणभट्ट की आत्मकथा' हैं।

उदाहरण 2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को किस रचना के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला था?

› हमें याद करना है कि द्विवेदी जी को कौन-कौन से सम्मान मिले थे।

› हमने पढ़ा कि उन्हें 'साहित्य अकादेमी' पुरस्कार मिला था।

› यह पुरस्कार उन्हें उनकी एक खास रचना 'आलोक पर्व' के लिए दिया गया था।

उत्तर – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को उनकी रचना 'आलोक पर्व' के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला था।

उदाहरण 3. द्विवेदी जी के अनुसार, साहित्य का मुख्य कार्य क्या है?

› पहला कदम, हम समझेंगे कि द्विवेदी जी साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं मानते थे।

› दूसरा कदम, उनका मानना था कि साहित्य का संबंध सीधे मनुष्य के जीवन से है।

› तीसरा कदम, साहित्य वह है जो मनुष्य को उसकी कमियों से ऊपर उठाए।

› चौथा कदम, यह मनुष्य की आत्मा को शक्तिशाली और प्रकाशित करे।

› पांचवां कदम, यह मनुष्य के मन में दूसरों के प्रति दया और सहानुभूति जगाए।

उत्तर – द्विवेदी जी के अनुसार, साहित्य का मुख्य कार्य मनुष्य को दुर्गति, हीनता और परमुखापेक्षिता से बचाकर उसकी आत्मा को तेजोद्दीप्त और हृदय को परदुखकातर व संवेदनशील बनाना है।

उदाहरण 4. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचनाओं में भारतीय संस्कृति किन-किन रूपों में प्रकट होती है? उदाहरण सहित समझाइए।

› पहला बिंदु: उनकी रचनाओं में भारतीय इतिहास, धर्म और दर्शन का गहरा संगम मिलता है। वे सिर्फ़ घटनाएँ नहीं बताते, बल्कि उनके पीछे की सोच और मान्यताओं को समझाते हैं।

› दूसरा बिंदु: उनकी सोच मानवतावादी थी। वे किसी एक समुदाय या जाति की बात नहीं करते, बल्कि पूरी मानव जाति के कल्याण और उनकी समस्याओं को उठाते हैं, खासकर स्त्रियों की पीड़ा को।

› तीसरा बिंदु: वे लोकधर्मी थे, यानी आम लोगों के जीवन, उनकी परंपराओं और उनके विश्वासों को सम्मान देते थे। उन्होंने कबीर जैसे लोक कवियों को भी बड़े सम्मान के साथ देखा।

› चौथा बिंदु: उनकी आलोचना में भी भारतीय संस्कृति का प्रगतिशील रूप दिखता है। वे पुरानी रूढ़ियों पर सवाल उठाते हैं और नई सोच को बढ़ावा देते हैं।

› उदाहरण के लिए, 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में जहाँ हमें प्राचीन भारत के इतिहास और दर्शन की झलक मिलती है, वहीं 'अशोक के फूल' जैसे निबंधों में वे बदलते समय और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हैं।

उत्तर – द्विवेदी जी की रचनाओं में भारतीय संस्कृति का स्वरूप उसके इतिहास, धर्म, दर्शन, मानवतावादी दृष्टिकोण, लोकधर्मी चेतना और प्रगतिशील आलोचना के संगम के रूप में प्रकट होता है, जिसमें वे स्त्री-पीड़ा और सामाजिक अन्याय को भी प्रमुखता से उठाते हैं।

उदाहरण 5. द्विवेदी जी स्त्री-दलन को किस रूप में देखते थे और उनके किस उपन्यास में स्त्री के महत्व को दर्शाया गया है?

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि द्विवेदी जी स्त्री-दलन को सिर्फ एक छोटी-मोटी समस्या नहीं मानते थे।

› दूसरा कदम: वे इसे हमारी पूरी संस्कृति और समाज के लिए एक 'सांस्कृतिक संकट' के रूप में पहचानते थे। उन्हें लगता था कि अगर स्त्री पीड़ित है, तो समाज पूरा नहीं है।

› तीसरा कदम: उन्होंने स्त्री के महत्व और सम्मान को 'बाणभट्ट की आत्मकथा' जैसे उपन्यासों में बहुत गहराई से दर्शाया है।

› चौथा कदम: इस उपन्यास में उन्होंने स्त्रियों की पीड़ा का विश्लेषण करते हुए उनकी महिमा को प्रतिष्ठित किया है।

उत्तर – द्विवेदी जी स्त्री-दलन को एक 'सांस्कृतिक संकट' के रूप में देखते थे। उनके उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में स्त्री के महत्व और महिमा को दर्शाया गया है।

उदाहरण 6. प्रश्न: हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने भक्तिकाल को भारतीय चिंताधारा का सहज विकास क्यों माना?

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि 'भारतीय चिंताधारा' क्या है। यह भारतीय समाज और संस्कृति में लंबे समय से चली आ रही सोच, दर्शन और मूल्यों की परंपरा है।

› दूसरा कदम: द्विवेदी जी ने लोक-परंपराओं, नाथों, सिद्धों और कबीर जैसे संतों के साहित्य का गहरा अध्ययन किया।

› तीसरा कदम: उन्होंने पाया कि भक्ति काल में जो प्रेम, समानता, आडंबरहीनता और ईश्वर के प्रति समर्पण के भाव थे, वे अचानक नहीं आए। बल्कि वे पहले से मौजूद भारतीय दार्शनिक विचारों और लोक-जीवन की सहज परंपराओं का ही एक विकसित रूप थे।

› चौथा कदम: इसलिए, उन्होंने इसे एक 'सहज विकास' के रूप में देखा, न कि किसी बाहरी प्रभाव या आकस्मिक घटना के रूप में।

उत्तर – द्विवेदी जी ने भक्तिकाल को भारतीय चिंताधारा का सहज विकास इसलिए माना क्योंकि उन्होंने उसे लोक-परंपराओं, नाथों, सिद्धों और कबीर के विचारों से जोड़ा, यह समझाते हुए कि भक्ति के मूल्य पहले से ही भारतीय समाज और संस्कृति में अंतर्निहित थे।

उदाहरण 7. लेखक ने 'शिरीष के फूल' निबंध में किस मानवीय मूल्य को स्थापित किया है?

› पहले हम देखेंगे कि निबंध का केंद्रीय विचार क्या है।

› निबंध 'शिरीष के फूल' एक ऐसे वृक्ष के बारे में बताता है जो भीषण गर्मी और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अविचल रहता है।

› यह वृक्ष मनुष्य की 'अजेय जिजीविषा' और विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य और कर्तव्यनिष्ठा के साथ बने रहने का प्रतीक है।

› लेखक इस माध्यम से यह संदेश देते हैं कि इंसान को भी सुख-दुःख में समान रहना चाहिए और हार नहीं माननी चाहिए।

उत्तर – लेखक ने 'शिरीष के फूल' निबंध के माध्यम से मनुष्य की 'अजेय जिजीविषा' (जीने की अटूट इच्छा) और विषम परिस्थितियों के बीच भी धैर्यपूर्वक कर्तव्यशील बने रहने के महान मानवीय मूल्य को स्थापित किया है।

उदाहरण 8. लेखक ने शिरीष के वृक्ष को 'कालजयी अवधूत' क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।

› पहले 'कालजयी' और 'अवधूत' दोनों शब्दों का अर्थ समझाएँ।

› फिर शिरीष के पेड़ की विशेषताओं का वर्णन करें, खासकर उसकी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी दृढ़ता का।

› इन विशेषताओं की तुलना 'अवधूत' के गुणों से करें, जैसे मोहमाया से रहित होकर तपस्या में लीन रहना।

› बताएँ कि शिरीष का यह गुण मनुष्य की जिजीविषा (जीने की इच्छा) और धैर्य का प्रतीक कैसे है।

› अंत में निष्कर्ष दें कि शिरीष हर स्थिति में अविचल रहकर, समय के हर वार को सहकर भी अडिग रहता है, इसीलिए वह 'कालजयी अवधूत' है।

उत्तर – लेखक ने शिरीष के वृक्ष को 'कालजयी अवधूत' इसलिए कहा है क्योंकि यह भीषण गर्मी और लू के थपेड़ों जैसी अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हरा-भरा रहता है और फूल देता है। जैसे एक अवधूत साधु संसार के मोह से मुक्त होकर हर स्थिति में स्थिर रहता है, वैसे ही शिरीष भी प्रकृति की कठोरता से अप्रभावित रहता है। यह उसकी अविचल प्रकृति, धैर्य और विषम परिस्थितियों में भी टिके रहने की प्रबल जिजीविषा का प्रतीक है, जो समय के प्रभावों को भी जीत लेती है।

उदाहरण 9. शिरीष के फूल की कोमलता और उसके फल की मजबूती में क्या अंतर है? उदाहरण सहित समझाइए।

› पहले शिरीष के फूल की बात करते हैं: शिरीष का फूल संस्कृत साहित्य में बहुत कोमल माना गया है। कवि कालिदास ने भी इसे सराहा है।

› उन्होंने लिखा है कि यह फूल सिर्फ भँवरे (जो बहुत हल्का होता है) के पैरों का 'पेलवं दबाव' (यानी कोमल दबाव) ही सह सकता है।

› फिर आते हैं इसके फल पर: इसके फल बिल्कुल अलग होते हैं। वे इतने मज़बूत होते हैं कि जब तक नए फल और पत्ते न आ जाएं, तब तक वे पेड़ को छोड़ते नहीं।

› यानी, पत्तियां झड़ जाती हैं, फूल गिर जाते हैं, पर फल मजबूती से पेड़ पर लगे रहते हैं।

› निष्कर्ष: इस प्रकार, फूल की कोमलता और फल की दृढ़ता, शिरीष में एक अद्भुत विरोधाभास पैदा करती है।

उत्तर – शिरीष का फूल इतना कोमल होता है कि वह केवल भँवरे के हल्के दबाव को ही सह पाता है, जबकि उसके फल बहुत

मजबूत होते हैं और आसानी से पेड़ से नहीं गिरते, वे दृढ़ता से टिके रहते हैं। यह गुण शिरीष को एक अनोखा विरोधाभासी पौधा बनाता है।

उदाहरण 10. लेखक ने शिरीष के पुराने फलों के माध्यम से किस सामाजिक समस्या की ओर संकेत किया है?

› पहले सोचो शिरीष के पुराने फल क्या करते हैं? वे पेड़ से चिपके रहते हैं, आसानी से नहीं गिरते।

› लेखक इसका किससे संबंध जोड़ते हैं? उन नेताओं से जो 'समय का रुख नहीं पहचानते'।

› यानी वे लोग जो पुरानी सोच और पद पर जमे रहना चाहते हैं, भले ही समय बदल गया हो।

› नई पीढ़ी को क्या करना पड़ता है? उन्हें 'धक्का मारकर' बाहर निकालना पड़ता है।

› तो लेखक समाज में 'पुरानी पीढ़ी' की अधिकार-लिप्सा और 'नई पीढ़ी' के बीच के संघर्ष को दर्शाते हैं, जहाँ पुरानी सोच नई को आसानी से जगह नहीं देती।

उत्तर – लेखक ने शिरीष के पुराने फलों के माध्यम से समाज, राजनीति और साहित्य में पुरानी पीढ़ी की 'अधिकार-लिप्सा' और समय के बदलाव को स्वीकार न करने की प्रवृत्ति पर संकेत किया है, जिसे नई पीढ़ी को संघर्ष करके ही हटाना पड़ता है। यह पुरानी बनाम नई पीढ़ी के द्वंद्व को दर्शाता है।

उदाहरण 11. लेखक ने किस बात को 'जड़ता' का प्रतीक कहा है और क्यों?

› पाठ में लेखक ने कहा है कि 'मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो कालदेवता की आँख बचा जाएँगे।'

› लेखक इस बात को जड़ता मानते हैं क्योंकि यह बदलाव से इनकार है।

› जो चीज़ गतिमान नहीं रहती, वह समय के साथ नष्ट हो जाती है।

उत्तर – लेखक ने अपनी जगह 'जमे रहने' और 'परिवर्तन न स्वीकारने' को जड़ता का प्रतीक कहा है, क्योंकि जो स्थिर हो जाता है, वह समय की मार से बच नहीं सकता और अंततः नष्ट हो जाता है, जैसे रुका हुआ पानी।

उदाहरण 12. लेखक के अनुसार, एक महान कवि के कौन से दो गुण होते हैं और उनका क्या अर्थ है?

› पहला गुण है 'अनासक्ति'। इसका अर्थ है कि कवि सांसारिक मोहमाया, जैसे धन, प्रशंसा या दिखावे से ऊपर उठकर अपनी कविता रचता है। वह किसी चीज़ के साथ बहुत ज़्यादा जुड़ाव नहीं रखता।

› दूसरा गुण है 'मस्ती'। इसका अर्थ है कि कवि अपने काम में इतना लीन हो जाता है कि उसे बाहरी दुनिया की परवाह नहीं रहती। वह बेपरवाह होकर अपनी धुन में रहता है और स्वतंत्र रूप से अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है।

› ये दोनों गुण उसे छोटा-मोटा हिसाब-किताब लगाने वाले कवियों से अलग करते हैं, जो यह सोचते रहते हैं कि किसने क्या कहा, या उन्हें क्या मिलेगा।

उत्तर – लेखक के अनुसार, एक महान कवि के दो गुण 'अनासक्ति' और 'मस्ती' हैं। अनासक्ति का अर्थ है सांसारिक मोह से मुक्त रहना और मस्ती का अर्थ है बेपरवाह होकर अपनी धुन में अपनी कला का निर्माण करना।

उदाहरण 13. लेखक के अनुसार कालिदास की 'अनासक्ति' का क्या अर्थ है और यह उन्हें कैसे महान बनाती है?

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि 'अनासक्ति' का मतलब क्या है। लेखक के हिसाब से अनासक्ति मतलब संसार के मोह माया से ऊपर उठ जाना, किसी चीज़ से बहुत ज़्यादा लगाव या मोह न रखना।

› दूसरा कदम: अब सोचो, कालिदास सौंदर्य को कैसे देखते थे? वो सिर्फ़ बाहरी रूप नहीं देखते थे, बल्कि चीज़ों के अंदर का सार, उसका 'भाव-रस' निकालते थे।

› तीसरा कदम: जब वो किसी चीज़ के बाहरी सुख-दुख या दिखावे में नहीं फँसते थे, तो वो सही और सच्ची सुंदरता को देख पाते थे। ये अनासक्ति उन्हें 'फक्कड़' बनाती थी, जिससे वो अपनी कला में पूरी तरह डूब पाते थे, बिना किसी लालच या दिखावे के।

› चौथा कदम: इसीलिए लेखक कहते हैं कि कालिदास महान थे, क्योंकि उनमें यह अनासक्ति थी। यही गुण उन्हें दुनिया के छोटे-मोटे लोभ-मोह से ऊपर उठाता था और वे अपनी कला से सच्चा रस निकाल पाते थे।

उत्तर – लेखक के अनुसार, कालिदास की अनासक्ति का अर्थ है सांसारिक मोह-माया से ऊपर उठकर तटस्थ भाव से सुंदरता को देखना और उसका सार ग्रहण करना। यह उन्हें बाहरी दिखावे या सुख-दुख से अप्रभावित रखती थी, जिससे वे कला के मूल भाव तक पहुँच पाते थे और यही उन्हें एक महान कवि बनाती थी।

उदाहरण 14. लेखक ने शिरीष और महात्मा गांधी के किन गुणों की समानता बताई है?

› पहला गुण है 'जिजीविषा' - जीने की प्रबल इच्छा. शिरीष भयंकर गर्मी में भी फूलता रहता है, हार नहीं मानता. गांधी जी ने भी संघर्षों के बावजूद कभी उम्मीद नहीं छोड़ी.

› दूसरा गुण है 'आत्मबल' - आंतरिक शक्ति और मन की दृढ़ता. शिरीष किसी भी परिस्थिति में विचलित नहीं होता. गांधी जी भी अपने सिद्धांतों पर अडिग रहे और कभी टूटे नहीं.

› दोनों ने विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी कोमलता बनाए रखी, लेकिन अंदर से बेहद कठोर और दृढ़ रहे.

उत्तर – लेखक ने शिरीष और महात्मा गांधी में जिजीविषा (जीने की इच्छा) और आत्मबल (आंतरिक शक्ति) के गुणों की समानता बताई है. दोनों ही विषम परिस्थितियों में भी अविचल और दृढ़ रहे.

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• उनकी प्रमुख रचनाओं, खास तौर पर निबंध संग्रह और उपन्यासों के नाम, बोर्ड परीक्षा में अक्सर सीधे-सीधे पूछ लिए जाते हैं। इन्हें ध्यान से याद करें।

• द्विवेदी जी की आलोचना दृष्टि और निबंध लेखन शैली, खासकर भक्ति काल पर उनके विचारों को अच्छे से समझ लेना, बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर सीधे सवाल आते हैं!

• यह निबंध बोर्ड परीक्षा में इसके मुख्य संदेश, यानी 'अजेय जिजीविषा' और 'धैर्य' जैसे मानवीय मूल्यों पर आधारित प्रश्न के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर 3-5 नंबर के लिए आता है। इसमें 'कालजयी' और 'अवधूत' शब्दों का अर्थ समझाते हुए शिरीष की विशेषताओं से तुलना करना महत्वपूर्ण है।

• यह प्रश्न 'सौंदर्य और दृढ़ता' के विरोधाभास पर आधारित होता है। शिरीष के फूल की कोमलता और फल की दृढ़ता, दोनों का उदाहरण देकर स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है।

• कबीर और कालिदास के उदाहरण देकर अनासक्ति और मस्ती को स्पष्ट करें। यह प्रश्न अक्सर लेखक के दृष्टिकोण को समझने के लिए आता है।

एक नज़र में रिवीज़न

› द्विवेदी जी: जन्म 1907 बलिया, निधन 1979 दिल्ली, प्रमुख रचनाएँ अशोक के फूल, बाणभट्ट की आत्मकथा.

› द्विवेदी जी: आलोचक के रूप में भक्ति काल को भारतीय चिंताधारा का सहज विकास माना; मौलिक विचारों वाले निबंधकार।

› शिरीष के फूल: ललित निबंध, कल्पलता संग्रह, अजेय जिजीविषा का प्रतीक।

› शिरीष: कालजयी अवधूत का प्रतीक, विषम परिस्थितियों में अडिग जिजीविषा का द्योतक।

› शिरीष: फूल कोमल (भँवरे का भार), फल मज़बूत (पेड़ पर दृढ़) - विरोधाभास।

› महान कवि = अनासक्त + मस्त (कबीर, कालिदास जैसे)